सहजोबाई

जन्म	:	1725 ।
निधन	:	अज्ञात ।
जन्म-स्थान	:	परीक्षितपुरा (दिल्ली के निकट) ।
पिता	:	हरि प्रसाद भार्गव ।
दीक्षा गुरु	:	चरनदास (प्रसिद्ध संत कवि) ।
विशेष	:	आजीवन अविवाहिता ।
रचना	:	सहज प्रकाश ।

सहजोबाई संत कवयित्री थीं । हिंदी के भक्तिकाव्य का प्रवाह भक्तिकाल के बाद भी चलता रहा था । हिंदी क्षेत्र की लोकभाषाओं में तो वह बहुत बाद तक चलता रहा । सहजोबाई और उनके गुरु संत कवि चरनदास की उपस्थिति 18वीं शती में थी जब हिंदी साहित्य के इतिहास का रीतिकाल चल रहा था । भक्ति के निर्गुण और सगुण दोनों भाव-प्रवाह परवर्ती युगों में भी चलते रहे । सहजो निर्गुण ज्ञानाश्रयी भक्ति के अंतर्गत आती हैं ।

सहजोबाई के जीवन से संबंधित बहुत कम तथ्यों की जानकारी है । साहित्य के इतिहासकार और विद्वान विवेचक स्वल्प तथ्यों का ही संग्रह कर सके हैं । स्वयं सहजोबाई ने अपने बारे में केवल इतनी ही सूचना दी है :

"हरि प्रसाद की सुता नाम है सहजोबाई ।
दूसर कुल में जन्म सदा गुरु चरन सहाई ।।"

विद्वानों के अनुसार उनका जन्म राजस्थान में हुआ था और वहाँ से वे अपने गुरु चरनदास के साथ दिल्ली आकर बस गई थीं ।

सहजो के व्यक्तित्व और काव्य में अटूट गुरु भक्ति अलग से ध्यान आकृष्ट करती है । वे गुरु को ईश्वर के समतुल्य ही नहीं, बल्कि ईश्वर से कहीं अधिक महत्त्व देती हैं :

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ
गुरु के सम हरि कूँ न निहारूँ ।।
चरनदास पर तन मन वारूँ
गुरु न तजूँ हरि कूँ तजि डारूँ ।।

सहजोबाई ने अपना संपूर्ण जीवन गुरु और उनके माध्यम से ईश्वर की भक्ति को समर्पित कर दिया। सांसारिकता से विराग, नाम जप तथा निर्गुण-सगुण ब्रह्म में अभेद भाव सहजोबाई की विशेषताएँ हैं। ज्ञान आधारित प्रेम-भक्ति सहजो में अविचल संकल्प और समर्पण की स्पृहणीय शक्ति बनकर प्रकट होती है। सहजो के काव्य में एक बड़ा अंश ऐसा प्राप्त होता है जिसमें श्रीकृष्ण उनके आराध्य प्रतीत होते हैं।

यहाँ प्रस्तुत सहजोबाई के दोनों पद नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित और सुधाकर पांडेय के द्वारा संपादित 'हिंदी काव्य गंगा' नामक संकलन से गृहीत हैं। इन पदों में सहजोबाई की भक्ति भावना की दो विशिष्ट छवियाँ उभरती हैं। सहजो निर्गुण भक्ति से प्रमुखतः जुड़ी हुई थीं, किंतु श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य और लीलाओं के प्रति भी उनके मन में संस्कारतः गहरे आकर्षण के बीज थे। प्रथम पद नटवर नागर, लीलाधर कृष्ण की सगुण लीलानुभूति की व्यंजना करता है। ऐसा लग सकता है कि सहजो के भीतर सगुण-निर्गुण भक्ति के अंतर्विरोध की यहाँ अभिव्यक्ति हुई है, किंतु ऐसा है नहीं। यहाँ जिस सगुण रूप का बखान है, वह उनकी निर्गुण भक्ति की उच्छल आनंदानुभूति का ही एक रूप है। द्वितीय पद में सहजो की गुरु भक्ति, जिसकी उत्कट अभिव्यक्ति के लिए वे जानी जाती हैं, की अपूर्व अभिव्यक्ति हुई है। गुरु के प्रति परमात्मा से भी बढ़कर प्रेम-भक्ति तथा कृतज्ञता की आत्मिक अनुभूति इस पद में विशेष रूप से द्रष्टव्य है।

◆ ◆ ◆

“ज्ञानी ब्रह्म के जिस स्वरूप का अपने चिंतन के बल से उद्घाटन करके तटस्थ हो जाता है उसी स्वरूप को भावुक भक्त लेता है और ध्यान या भावमग्नता के समय उसमें अपनी सारी सत्ता को – हृदय, प्राण, बुद्धि, कल्पना, संकल्प इत्यादि सारी वृत्तियों को – समाहित और घनीभूत करके बड़े वेग के साथ लीन कर देता है। इस प्रकार अपनी व्यक्तिगत सत्ता की भावना का पूर्ण विसर्जन हो जाने पर केवल उसी ध्येय स्वरूप की अत्यंत तीव्र अनुभूति मात्र शेष रह जाती है। यह एकांत अनुभूति प्रत्यक्ष दर्शन के ही तुल्य होती है।”

(भक्ति का विकास)

–आचार्य रामचंद्र शुक्ल

पद - 1

मुकुट लटक अटकी मन माहीं ।
नृत तन नटवर मदन मनोहर कुंडल झलक अलक बिथुराई ।
नाक बुलाक हलत मुक्ताहल, होठ मटक गति भौंह चलाई ।।
ठुमुक ठुमुक पग धरत धरनि पर, बाँह उठाय करत चतुराई ।।
झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तता थेई थेई रीझ रिझाई ।
चरनदास सहजो हिय अंतर भवनंकारी जित रहौ सदाई ।।

पद - 2

राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ । गुरु के सम हरिकूँ न निहारूँ ।।
हरि ने जन्म दियो जग माहीं । गुरु ने आवागमन छुटाहीं ।।
हरि ने पाँच चोर दिए साथा । गुरु ने लई छुटाय अनाथा ।।
हरि ने कुटुंब जाल में गेरी । गुरु ने काटी ममता बेरी ।।
हरि ने रोग भोग उरझायौ । गुरु जोगी कर सबै छुटायौ ।।
हरि ने कर्म भर्म भरमायौ । गुरु ने आतम रूप लखायौ ।।
हरि ने मोरूँ आप छिपायौ । गुरु दीपक दै ताहि दिखायो ।।
फिर हरि बंध मुक्तिगति लाये । गुरु ने सबही भर्म मिटाये ।।
चरनदास पर तन मन वारूँ । गुरु न तजूँ हरिकूँ तजि डारूँ ।।

अभ्यास

पद के साथ

1. सहजोबाई के मन में उनके आराध्य की कैसी छवि बसी हुई है ?
2. सहजोबाई ने किससे सदा सहायक बने रहने की प्रार्थना की है ?
3. झुनक झुनक नूपुर झनकारत, तता थेई थेई रीझ रिझाई ।
   चरनदास सहजो हिय अंतर, भवनकारी जित रहौ सदाई ।।
   –इन पंक्तियों का सौंदर्य स्पष्ट करें ।
4. सहजोबाई ने हरि से उच्च स्थान गुरु को दिया है । इसके लिए वे क्या-क्या तर्क देती हैं ?
5. 'हरि ने पाँच चोर दिए साथा । गुरु ने लई छुटाय अंनाथा ।।' यहाँ किन पाँच चोरों की ओर संकेत है ? गुरु उससे कैसे बचाते हैं ?
6. 'हरि ने कर्म भर्म भरमायौ । गुरु ने आतम रूप लखायौ ।
   हरि ने मोरूँ आप छिपायौ । गुरु दीपक दै ताहि दिखायौ ।।
   –इन पंक्तियों की व्याख्या करें ।https://www.evidyarthi.in/
7. पठित पद में सहजोबाई ने गुरु पर स्वयं को न्यौछावर किया है । वह पंक्ति लिखें ।
8. पठित पद के आधार पर सहजोबाई की गुरु भक्ति का मूल्यांकन करें ।

पद के आस-पास

1. प्रथम पद की तुलना सूरदास के कृष्ण बाल-वर्णन के पदों से की जा सकती है । यहाँ एक पद दिया जा रहा है । आप इसके अतिरिक्त दो पदों का संग्रह करें और कक्षा में उनका सस्वर पाठ करें ।

   चलत देखि जसुमति सुख पावै ।
   ठुमुकि-ठुमुकि पग धरनी रेंगत, जननी देखि दिखावै ।।
   देहरि लौं चलि जात, बहुरि फिरि-फिरि इत हीं कौं आवै ।
   गिरि-गिरि परत बनत नहिं नाँधत सुर-मुनि सोच करावै ।
   कोटि ब्रह्मंड करत छिन भीतर, हरत बिलंब न लावै ।
   ताकौं लिए नंद की रानी, नाना खेल खिलावै ।।
   तब जसुमति कर टेकि स्याम कौ, क्रम-क्रम करि उतरावै ।
   सूरदास प्रभु देखि-देखि, सुर-नर-मुनि बुद्धि भुलावै ।।

2. सहजोबाई निर्गुण भक्त कवयित्री हैं । सगुण और निर्गुण भक्ति में क्या अंतर है ? इस विषय पर अपने शिक्षक से चर्चा करें ।

3. सहजोबाई और पाठ्य पुस्तक में संकलित मीराबाई के पदों की तुलना करते हुए दोनों की काव्यभाषा के संबंध में अपना विचार रखें ।
4. कबीर ने भी गुरु की वंदना की है । ऐसी कुछ साखियाँ नीचे दी जा रही हैं :

बलिहारी गुर आपणैं द्यौं हाड़ी कै बार ।
जिन मानिष तैं देवता करत न लागी बार ।।

पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथि ।
आगैं थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि ।।

गुरु गोविंद तौ एक हैं, दूजा यह आकार ।
आपा मेट जीवत मरै, तो पावै करतार ।।

आप कबीर की गुरु महिमा संबंधी दस साखियों का संकलन करें और उन साखियों का अर्थ अपने शिक्षक से मालूम करें ।

5. सहजोबाई चरनदास की शिष्या थीं । चरनदास के बारे में जानकारी इकट्ठी करें और सहजो की ही तरह उनकी दूसरी प्रसिद्ध शिष्या दयाबाई के भी कुछ पद संग्रह करें ।

भाषा की बात

1. पठित पदों में अनुप्रास अलंकार है । ऐसे उदाहरणों को छाँटकर लिखें ।
2. 'भौंह चलाना' का क्या अर्थ है ?
3. चतुराई, रिझाई जैसे शब्दों में 'आई' प्रत्यय लगा है । पठित पदों से अलग 'आई' प्रत्यय से पाँच शब्द बनाएँ ।
4. कर्म भर्म, रोग भोग में कौन-सा समास है ?
5. इनका शुद्ध रूप लिखें – नृत, गुर, हरिकूँ, बेरी, भर्म, आतम ।
6. पठित पदों से क्रिया पद चुनिए ।

शब्द निधि

नृत : नृत्य
नटवर : लीलाधारी कृष्ण
अलक : केश, लट
बिथुराई : बिखरा हुआ
बुलाक : नाक का आभूषण
हलत : हिलना
मुक्ताहल : मोती
नूपुर : घुँघरू
रीझ : मोहित
धरनि(धरणी) : धरती
हिय : हृदय
भवनकारी : हृदय को भवन बनाकर रहने वाले
सदाई : सदा ही, सर्वदा
बिसारूँ : भूलूँ
माँही : में
जाल में गेरी : जाल में डालना
बेरी : बेड़ी, जंजीर
लखायौ : दिखाया
आप छिपायौ : आत्मरूप छिपा दिया
तजि डारूँ : छोड़ दूँ
मोरूँ : मुझसे